# ज्ञान प्रबोधिनी

ज्ञान प्रबोधिनी के संस्थापक स्वर्गीय विनायक विश्वनाथ तथा आप्पाजी पेंडसे एक शिक्षणतज्ज्ञ, समाजसंघटक, कृतिशील विचारक थे। स्वामी विवेकानंदजी उनके प्रेरणास्थान थे। हमारे देश की अस्मिता और एकात्मता के द्वारा व्यक्त होनेवाली सांस्कृतिक परंपरा तथा दारिद्र्य-निर्मूलन, दुःखनिवारण इसलिए स्वामीजी ने राष्ट्रजागृती और एकता के लिये समायोजन करने का प्रयास किया। 'मानवउन्नति के लिए शिक्षा' यह विचार उन्होंने प्रसृत किया। इस विचारके माध्यम से ही देश-विदेशों मे अनेक कार्यों की नींव रखी गयी। इन विचारों का ही 'ज्ञान प्रबोधिनी' यह स्वतंत्र आविष्कार है।

मनोवैज्ञानिक श्री. आप्पा पेंडसेजी ने यह ताक लिया था कि उच्च उद्दिष्ट साकार करने के लिए स्वयंपूर्ण बौद्धिक क्षमता की आवश्यकता है। उन्होंने जाना था कि स्वतंत्र भारत के विविध प्रश्न जिन युवक-युवतीओं का उत्तम बौद्धिक, शारीरिक, आत्मिक विकसन हुआ है, जो आत्मनिर्भर है, वही सुलझा सकते हैं। समाज को ऐसे युवक-युवतीओं की जरूरत है। 'देशका कालानुरूप स्वरूप बदलना' इस ध्येय के प्रति आप्पा पेंडसेजी ने नेतृत्वशिक्षा तथा नेतृत्वविकसन का मार्ग चुना। इन विचारोंमें से ही ज्ञान प्रबोधिनी की शुरुआत १९६२ में 'बुद्धिवंतों के लिए शैक्षिक प्रयोग' इस स्वरूप में हुई।

बुद्धि को समाज-परिवर्तन की प्रेरणा देनेवाली तथा ज्ञान का प्रबोधन करनेवाली यह ज्ञान प्रबोधिनी। चुनिंदे छात्रों के साथ शुरू हुई इस शैक्षिक संस्थाने आज राष्ट्रीय तथा आंतरराष्ट्रीय स्तरपर एक मान्यताप्राप्त संगठन के नाते अपनी उत्तम पहचान बनायी है। हर व्यक्ति की प्रज्ञा को सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा देने की आकांक्षा ज्ञान प्रबोधिनी मन में हमेशा रखती है। आज यह काम ग्रामीण विभाग तथा शहर में अनेक जगहोंपर शिक्षा, अनुसंधान, ग्रामविकास, आरोग्य, संगठन, स्त्री-शक्ती प्रबोधन और राष्ट्रीय एकात्मता ऐसे विविध क्षेत्रों में जारी है।

मुख्यालय - पुणे
केंद्र - निगडी, सोलापूर, हराळी
उपकेंद्र - साळुंब्रे, शिवापूर, वेल्हे
विस्तार केंद्र - अंबाजोगाई, डोंबिवली

# शिक्षा

शिक्षा को चार दीवारों की और क्रमिक अध्ययन की चौखट से बाहर लाकर, बुद्धि के विविध आयामों को क्रियाशील तथा समाजाभिमुख बनाना यह प्रबोधिनी का विशेष उद्दिष्ट है। इसलिए अनुभवाधिष्ठित शिक्षा को महत्त्व देनेवाली शिक्षापद्धती ज्ञान प्रबोधिनीने अपनायी है। व्यक्तिविकास और समाज-विकास एक दूसरे पर निर्भर होते है। इसलिये सहाध्याय-दिन, ग्रामीण शिबिर, आपात्कालीन मददकार्य, स्वयंअध्ययन तंत्र, समाजदर्शन कार्यक्रम, सामूहिक गीतगायन, प्रकल्प, अध्ययन के प्रति दृढता निर्माण करने हेतु विद्याव्रत संस्कार, पंचकोश विकसन पर आधारित शिक्षाक्रम की निर्मिती, राष्ट्रीय तथा आंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलने वाले खिलाडी तैयार करने हेतु विशेष प्रशिक्षण, ऐसे विभिन्न प्रयोग यहाँ हो रहे हैं। शैक्षिक साहित्य-निर्मिती, अध्यापक प्रशिक्षण वर्ग, स्पर्धा परीक्षा मार्गदर्शन वर्ग, नेतृत्वविकसन के लिए प्रशिक्षण वर्ग, पूर्व प्राथमिक विद्यार्थियों के अध्यापकों के लिये विद्यालय इत्यादि, और इन सब शैक्षिक उपक्रमों को दूरदूर तक पहुँचाने हेतु मासिक पत्रिका ये प्रबोधिनी की शिक्षापद्धति के कुछ चुनिंदा प्रयोग हैं।

# अनुसंधान

ज्ञान प्रबोधिनी का अनुसंधान प्रभाग नए पुराने का मेल जोडते हुए, परंपरा से प्राप्त ज्ञान पर अभ्यासपूर्ण भाष्य करते हुए इस ज्ञान के संवर्धन और संरक्षण के लिये कार्यरत है। यह ज्ञान व्यक्तिविकास के लिये उपयुक्त ठहरे इसलिये प्रबोधिनी का अनुसंधान विभाग क्रियाशील है। संस्कृत, मानसशास्त्र तथा अन्य सामाजिक शास्त्रों का अनुसंधान प्रबोधिनीने शुरू किया वह भी व्यक्तिमत्त्व विकसन के हेतू से। पारंपरिक संस्कार विधियों की पुनर्रचना, पौरोहित्य प्रशिक्षण वर्ग, महाराष्ट्र से लेकर अन्य देशोंतक होनेवाले संस्कार समारोह, विविध व्याख्यानमाला, गिल्फर्ड मॉडेल पर आधारित विविध कसौटियों का निर्माण, बच्चों से लेकर विविध कंपनीओं के सदस्यों के लिए अनेक विषयोंपर प्रशिक्षण, बुद्धिमान विद्यार्थियों के अध्यापकों के लिए वर्ग, इत्यादि अनेक क्षेत्रों में अनुसंधान-कार्य आज प्रबोधिनी में प्रचलित है। राष्ट्रीय तथा आंतरराष्ट्रीय विविध चर्चासत्रों में प्रबोधिनी के सदस्य सहभाग ले रहे हैं। ज्ञान प्रबोधिनी संशोधन संस्था यह विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, महाराष्ट्र राज्य शिक्षण संचालनालय और सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय इत्यादि विविध स्तरोंपर शासन मान्य संस्था है।

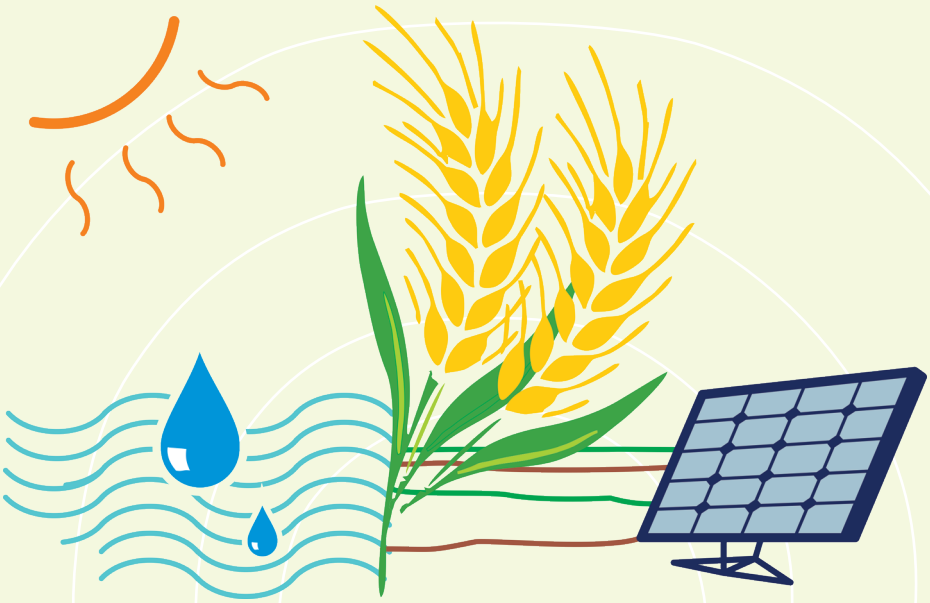

# ग्रामविकास और आरोग्य

ग्रामीण विभाग के सर्वंकष विकासार्थ प्रयास करते रहना यह शुरू से ही प्रबोधिनी के कार्य का महत्त्वपूर्ण उद्देश रहा है। जलव्यवस्थापन और सिंचन के हेतू मिट्टी के बाँध, झरनों का विकास, सिमेंट बाँध, खेत में तालाब इत्यादि का निर्माण करना, पहाड़ी प्रदेश के छोटी छोटी बस्तीयों के लिए सौर दीपों का प्रसार, सौर-जैव-पवन ऊर्जा के विविध प्रयोग, ग्रामीण युवकों के लिए तंत्र ज्ञान की शिक्षा तथा वनवासियों को उपजीविका प्राप्त करने के लिए आवश्यक साधनों का प्रशिक्षण, तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के औपचारिक कृषिशिक्षा के लिए स्वतंत्र आस्थापना की निर्मिती, ऐसे विविध कार्य प्रबोधिनी करती है। इसके साथ १९८१ से २००३ तक कुष्ठरोग निर्मूलन कार्य, गर्भवती महिलाओं की वैद्यकीय जाँच, कुपोषण मुक्ति के लिए आँगनवाडी सेविका प्रशिक्षण, पानी के फिल्टर के उपयोग सिखाने हेतु प्रशिक्षण, पौष्टिक आहार योजना, प्रथमोपचार हेतु आरोग्य सेविका प्रशिक्षण, परिचारिका प्रशिक्षण ऐसे स्वास्थ्य संबंधी कार्य भी प्रबोधिनी के माध्यम से ग्रामीण विभाग में जारी हैं। व्यक्तिगत प्रगति से परे अपने गाँव की उन्नती के बारे में सोचने वाले कार्यकर्ताओं को इकठ्ठा करके उनके द्वारा विकासकार्य करना इसलिए प्रबोधिनी प्रयत्नशील है।

# संगठन

प्रबोधिनी के संस्थापक कै. आप्पाजी पेंडसे कहते थे, 'देश के सभी समस्याओं का हल है- ध्येय के प्रति एकात्म भावनासें मिलकर काम करना।' शिक्षा, संशोधन, व्यापार, उद्योग, खेती, संरक्षण, स्वास्थ्य इन सभी क्षेत्रों में प्रसंग के अनुसार भविष्यवेध लेते हुए कर्तृत्वदर्शन की और प्रतिभाशाली नेतृत्व की प्रेरणा जागृत करना तथा कुशलता-प्रशिक्षण देना यह युवक और युवती दलों के उपक्रम का प्रमुख उद्दिष्ट है। क्रीडा-कला-विज्ञान आदि विविध माध्यमों के समुचित उपयोग से भिन्न भिन्न छात्रों तक पहुँचकर उन्हें समूहकार्यकौशल्य सीखने का मौका दिया जाता है। छात्रों का 'दल' समूहभावना बढाने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में काम करता है। समूह में काम सीखना, विविध समूहों में मिल-जुल जाना, अनेक सामाजिक विषयोंपर सखोल विचार, निजी शारीरिक तथा मानसिक क्षमताएँ बढ़ाना, विविध संस्था, भौगोलिक प्रदेशों को भेंट देकर हम सब एकही राष्ट्रीय सूत्र में बंधे हैं, यह अनुभव लेना, व्यक्ति के अलावा संगठनका महत्त्व समझ लेना, समूह की ध्येयनिष्ठा पर विश्वास रखना, ऐसे अनेक अनुभव लेनेवाले युवक तथा युवती राष्ट्रविकास के काम में अधिक योगदान दे सकते हैं, ऐसा प्रबोधिनी का अनुभव है।

# स्त्री-शक्ती प्रबोधन

सभी नारियों में आत्मसम्मान, समाजव्यवहारों में सहभाग और उनका राष्ट्रीय चारित्र्य विकसित करना यह महत्त्वपूर्ण है ऐसा प्रबोधिनी का मानना है। नारियों के बारे में सिर्फ समानता यहीं एक विचार उपयुक्त नहीं है। तो उनके गुणों का, कल्पनाशक्ति का तथा कलात्मकता का विकास होना चाहिए, इस विचार से शहरवासी नारियाँ तथा ग्रामीण नारियों का विविध सभाओं द्वारा कौशल्य प्रशिक्षण, स्वयंरोजगार का मौका निर्माण करना, बचत गट के माध्यम से उनको इकठ्ठा करना, उन्हें समाज के प्रति कुछ कार्यक्रमों का आयोजन करने का मौका देना, ग्रामीण विभाग में आरोग्य-प्रबोधन करना, कौटुंबिक समुपदेशन, आँगनवाडी चलाने का प्रशिक्षण, नारियों के लिए द्वैमासिक पत्रिका, ऐसे अनेक उपक्रम आज शुरू हैं। नारीयों के व्यक्तित्व तथा नेतृत्व का विकास करने हेतु विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। शहरी विभाग में भी पदवी तक शिक्षित महिलाएँ एक साथ मिलकर छात्रों के लिये लैंगिकता प्रशिक्षण, अध्ययन के प्रति दृढता निर्माण करने हेतु होनेवाले विद्याव्रत संस्कार का विविध पाठशालाओं में आयोजन, विभिन्न विषयोंपर विचार विनिमय के लिये मासिक कार्यक्रम, ऐसे अनेक व्यक्तिमत्त्व विकसन के उपक्रम नियमित रूप से आयोजित करती हैं।

# राष्ट्रीय एकात्मता

ज्ञान प्रबोधिनी की दृष्टि से प्रज्ञा को प्रेरणासंपन्न करने का काम आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक भेदभावों के परे जानेवाला सार्वदेशिक कार्य है। समाज के विभिन्न समूहों में भौतिक विकास तथा सांस्कृतिक उन्नति के लिये काम करना प्रबोधिनी का ध्येय है। समाज के विभिन्न समूहों से महिला और पुरुष कार्यकर्ताओं को प्रेरित तथा प्रशिक्षित करना है। जो हम तक नहीं पहुँच सकते उन तक पहुँचना है। भिन्न भिन्न समूहों में संवाद-साहचर्य बढाने के लिये वैज्ञानिक प्रयोग, शिक्षक प्रशिक्षण, स्पर्धा परीक्षाओं के लिए मार्गदर्शन, हस्तकौशल सिखाना, महिला और युवकोंके लिए व्यवसाय कौशल वर्ग, व्यक्तित्व विकास शिबिरों का संयोजन इन माध्यमों का उचित उपयोग करके प्रबोधिनी अपने केंद्र के पडोस की बस्तियों से लेकर सीमावर्ती प्रदेशों तक विस्तारित रूप धारण कर रही है।

# ज्ञान प्रबोधिनी


ज्ञान प्रबोधिनी : ५१० सदाशिव पेठ, पुणे ४११ ०३०
दूरभाष क्र. : (०२०) २४२०७०००, २४४७७६९१
फॅक्स : (०२०) २४४९१८०६
वेबसाईट : www.jnanaprabodhini.org
ई-मेल : contact@jnanaprabodhini.org



### ज्ञान प्रबोधिनी के सन्मान्य सदस्य

| | | |
|---|---|---|
| डॉ. रघुनाथ माशेलकर | - | *पूर्व महानिदेशक, सीएस्आईआर्, नई दिल्ली* |
| श्री. आण्णा हजारे | - | *सामाजिक कार्यकर्ता* |
| श्रीमती अनु आगा | - | *पूर्व सांसद, व्यवसायी, सामाजिक कार्यकर्ता* |
| डॉ. जयंत नारळीकर | - | *पूर्व निदेशक, आयुका, पुणे* |
| श्री. मनोज नरवणे | - | *पूर्व चिफ ऑफ आर्मी स्टाफ* |

### ज्ञान प्रबोधिनी, पुणे के पदाधिकारी

| | | | |
|---|---|---|---|
| १. | डॉ. रघुनाथ माशेलकर | - | *अध्यक्ष* |
| २. | डॉ. विजय लक्ष्मण केळकर | - | *उपाध्यक्ष* |
| ३. | डॉ. श. बा./रवि पंडित | - | *कार्याध्यक्ष* |
| ४. | डॉ. गिरीश श्री. बापट | - | *संचालक* |
| ५. | प्रा. महेंद्र सेठिया | - | *सचिव* |
| ६. | श्री. आशुतोष बारमुख | - | *संयुक्त सचिव* |
| ७. | श्री. मोहन गुजराथी | - | *कोषाध्यक्ष* |
| ८. | श्री. सचिन गाडगीळ | - | *संपत्ति प्रबंधक* |

### ज्ञान प्रबोधिनी संस्था से संलग्न न्यास

१. ज्ञान प्रबोधिनी संशोधन संस्था
२. ज्ञान प्रबोधिनी आयुर्विज्ञान न्यास
३. ज्ञान प्रबोधिनी सोलापूर
४. ज्ञान प्रबोधिनी शिवप्रदेश
५. ग्राम प्रबोधिनी

### संबद्ध धारा ८ कंपनियाँ

१. ज्ञान प्रबोधिनी प्रशाला अल्युम्नाई फौंडेशन (JPPAF)
२. एसीआईसी (ACIC) ज्ञान प्रबोधिनी फौंडेशन

### पंजीकृत सार्वजनिक चैरिटी संस्था, यूएस्ए

१. ज्ञान प्रबोधिनी फौंडेशन (JPF)


- ज्ञान प्रबोधिनी को किए गए आर्थिक साहाय्य को आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के तहत छूट दी गई है ।
- ज्ञान प्रबोधिनी संशोधन संस्था को किए गए आर्थिक साहाय्य को आयकर अधिनियम की धारा ३५ (i) (iii) के तहत छूट दी गई है ।